# लोक-समाज की कथा-संवेदना

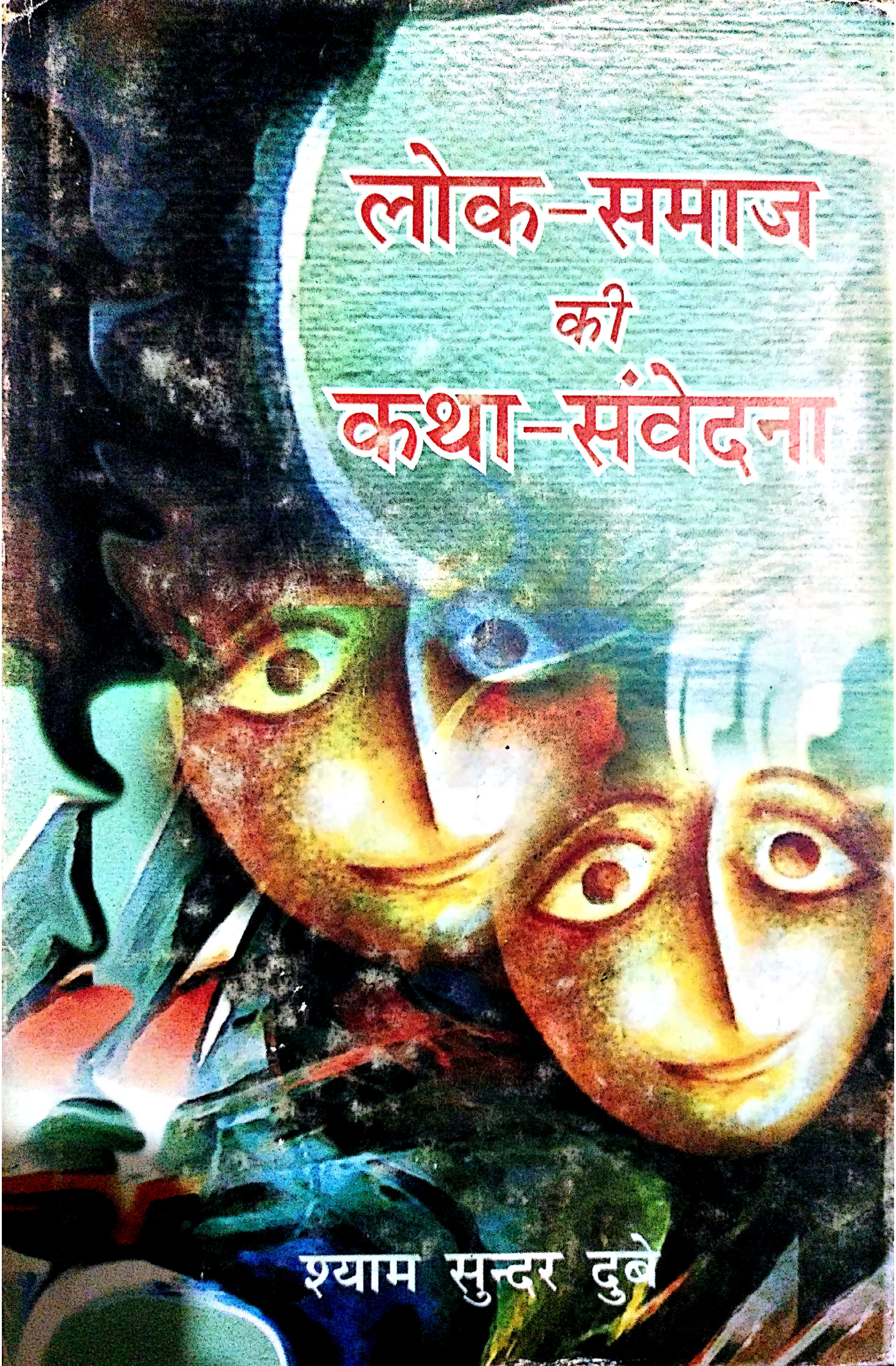

श्याम सुन्दर दुबे

# लोक-समाज की कथा-संवेदना

श्यामसुंदर दुबे

एम.पी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स
दिल्ली-110032

मूल्य : 175/-
प्रथम संस्करण 2008

ISBN : 978-81-89500-22-1

प्रकाशक
एम.पी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स
(प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता)
10302, वेस्ट गोरख पार्क, गली नं. 1,
शाहदरा, दिल्ली-110032

3072/28, प्रथम तल, गोला मार्किट,
(नजदीक गोलचा पार्किंग), दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 23287638, 23272330, मो. : 9811008339

मुद्रित

सीमा शर्मा द्वारा एम.पी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स के लिए प्रकाशित एवं मोहित प्रिंटर्स द्वारा मुद्रित।

# विषय–सूची

## खण्ड-एक
## कथा-संरचना के आधार


1. यथार्थ की सीमाएँ और उपन्यास 7
2. हमारे समय की कहानी : व्यक्ति संघर्ष की भूमिका 15
3. प्रामाणिक अनुभूति और समकालीन कथा–रचना 20


## खण्ड-दो
## उपन्यास का संसार


4. 'गोदान' की इतिहास दृष्टि 25
5. अपने अपने अजनबीः मृत्यु से साक्षात्कार 31
6. सुबह की तलाश : छत्तीसगढ़ की सही पहचान 36
7. छद्म के विरुद्ध : अपना मोर्चा 44
8. कोहरे में सूरज का अक्स 54
9. लोक स्त्री का एक और पाठ 63
10. टूटते सामाजिक ढांचे के बीच उभरते वैचारिक वलय 70
11. शताब्दी की शुरूआती संवेदना का सत्य : डर हमारी जेबों में 77
12. सम्पूर्णता की तलाश में 87

13. व्यंग्य की धार पर बुंदेलखण्ड 92

14. नारी–शोषण की कथा 99

15. लोकतंत्र की तरफदारी का मूल्य आधारित रुख: सुरंग में सुबह 103

16. नारी–नियति का सामाजिक यथार्थ 109

## खण्ड-तीन
## कहानी का संसार

17. जातीय स्मृतियों का आस्वादन : 'जमुनी' 115

18. सतह के नीचे का संसार 120

19. ज़िन्दगी की ज़िन्दादिली का नमूना 126

20. नारी–अस्मिता का सौन्दर्य संदर्भ 130

# खण्ड-एक
# कथा-संरचना के आधार

## 1

## यथार्थ की सीमाएँ और उपन्यास

"कल्पना के गढ़े हुए आदमियों में हमारा विश्वास नहीं है, उनके कार्यों और विचारों से हम प्रभावित नहीं होते। हमें उनका निश्चय हो जाना चाहिए कि लेखक ने जो सृष्टि की है, वह प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर की है और अपने पात्रों की जुबान से वह खुद बोल रहा है।" प्रेमचंद जब यह लिख रहे थे, तब उनके सामने यथार्थ के विषय में निश्चित रूप से एक स्पष्ट खाका था। यथार्थ किसका और कैसा? क्या अपने समय–समाज को उसकी समस्याओं को और उसके बाह्याभ्यांतर द्वन्द्वों को प्रस्तुत करने को यथार्थ की तरह स्वीकार किया जाए अथवा लेखक की अपनी प्रतिक्रियाओं से उत्पन्न एक समांतर संसार के उस रूप को जो रचनागत तमाम दबावों से एक कलात्मक अवधारणा के विन्यास में आकार ग्रहण करता है? जो मन्तव्यों, स्वप्नों और सरोकारों का यथार्थ, समूह–मन की सच्चाईयों को एक रचना प्रतीति में प्रस्तुत करता है, अथवा जो इतिहास की निरपेक्ष सच्चाईयों को या उनकी शाश्वत संदर्भवान सत्ताओं को यथार्थ के रूप में ग्रहण किया जाए? ऐसे तमाम प्रश्न यथार्थ के अंतरी–कोनों को जांचने परखने के लिए खड़े किए जा सकते हैं। खड़े किए जाते रहे हैं।

संसार की पहचान में कोई कहे सत्य झूठ कहे कोई जुगल प्रबल कोई माने, जैसी दार्शनिक प्रपत्तियों को भी उपयोग में लाया गया। दरअसल जो है वह सच है–यथार्थ है और जो इस यथार्थ के परे एक प्रतिसृष्टि की संभावना रचना के भीतर निरंतर स्वप्न की तरह चलती है–वह भी यथार्थ हैं?

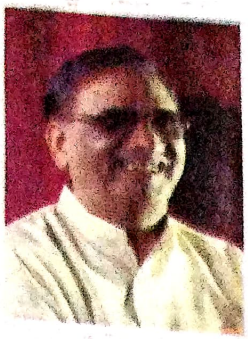

- श्यामसुंदर दुबे
- जन्म–12 दिसंबर 1944 म॰प्र॰ के दम जिले के वर्तलाई (हटा) में
- शिक्षा–एम.ए., पी.एच.डी.
- सृजन–ललित निबंध संकलन–'कालमृगय 'विषाद बांसुरी की टेर', 'कोई खिडकी इ दीवार से'। नवगीत एवं काव्य संकलन–री खेत में निजुका ऋतुऐं जो आदमी के भीत हैं, इतने करीब से देखो, धरती के अनंत चक्करों में कथा–दाखिल खारिज, मरे न मातुर खाये (उपन्यास) जड़ों की ओर (कहानी)। समीक्षा–बिहारी सतसई का सांस्कृतिक अध्ययन, विहारी सनसई : काव्य और चित्रकला, संस्कृति, समाज और संवेदना। लोक–लाक : पहचान, परंपरा एवं प्रवाह, बुंदेलखण्ड की लोक कथायें, लोक चित्रकला: परंपरा और रचना–दृष्टि, लोक जीवन का पुण्य प्रवाह : भारत की नदियां, लोक में जल। स्फुट–समसामयिक निबंध, 'हमारा राजा हँसता क्यों नहीं' आदि लगभग पच्चीस पुस्तकें।
- पुरस्कार सम्मान–मध्यप्रदेश साहित्य सम्मेलन का 'वागीश्वरी' म॰प्र॰ साहित्य ऐकेडमी के 'बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी, डॉ॰ शंभूनाथ सिंह नवगीत पुरस्कार, मध्यप्रदेश लेखक संघ का पुष्कर सम्मान, छत्तीसगढ़ शासन का रामचंद्र सरस्वती हिन्दी साहित्य पुरस्कार, डॉ॰ नर्मदा प्रसाद गुप्त अकादमी का 'लोक रत्न' सम्मान मधुवन संस्था भोपाल का 'श्रेष्ठ कला आचार्य' आदि अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से अलंकृत।
- व्यवसाय–38 वर्षों तक विभिन्न शासकीय महाविद्यालयों में अध्यापन करते हुए शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त।
- संप्रति–निदेशक, मुक्तिबोध सृजन पीठ, डॉ॰ हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म॰प्र॰)।
- स्थायीपता–श्री चंडी जी वार्ड, हटा (दमोह) म. प्र. 470775 दूरभाष–07604–262281 मोबाईल–9425405439

Rs. 175/-

ISBN : 978-81-89500-22-1
9788189500221

**MPS** PUBLISHERS & DISTRIBUTORS
1/10302, West Gorakh Park, Street No. 1, Shahdara, Delhi-110032
Ph. : 01122828254